



# पत्र-पुष्प



## “अब देही-अभिमानी रहने की नेचर को नेचुरल बना लो तो बाप समान बन जायेंगे” दादी जी की शुभ प्रेरणायें (20-10-21)

प्राणप्यारे अव्यक्त मूर्त मात-पिता बापदादा के अति स्नेही, सदा ऊंचे से ऊंचे स्वमान में स्थित रह विश्व कल्याण की सेवा में तत्पर, अपनी शक्तिशाली मन्सा द्वारा पूरे विश्व को सकाश दे सबकी बुद्धियों को परिवर्तन करने वाली निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सभी ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - वर्तमान समय प्यारे अव्यक्त बापदादा की ऑनलाइन मिलन की यह सीज़न शुरू हुई है, सीमित संख्या में भाई बहिनें अपने टर्न अनुसार प्यारे मधुबन घर में पहुंचकर खूब रिफ्रेश हो रहे हैं। अवतरण दिन पर विशेष देश विदेश के सभी बाबा के बच्चों की नज़र मधुबन और मधुबन वाले बाबा पर टिकी रहती है। सभी अपने बुद्धि रूपी विमान द्वारा सूक्ष्म रूप में बापदादा की नज़रों के सामने हाज़िर नाज़िर होते हैं। बापदादा की वरदानी दृष्टि, मीठे बोल सभी में एक नया उमंग-उत्साह भर देते हैं। ऐसे लगता जैसे हम सम्मुख में ही बापदादा से मिलन मना रहे हैं। यह साइंस और साइलेन्स की शक्ति का कम्बाइन्ड रूप कितनी अनुभूतियां करा रहा है। जब सभी एक ही शुद्ध संकल्प में एकाग्रचित हो बैठते हैं तो शान्ति के शक्तिशाली प्रकम्पन चारों ओर फैलने लगते हैं। बापदादा अपने बच्चों को भिन्न-भिन्न नया होमवर्क भी दे देते हैं। इस बार बाबा ने विशेष इशारा दिया है कि बच्चे, बाप समान बनना है तो जैसे अभी देह भान नेचुरल नेचर बन गया है, ऐसे अब देही-अभिमानी स्थिति को नेचुरल नेचर बनाओ। उसके लिए कुछेक बातों का विशेष इशारा दिया है:-

जैसे 1- निराकारी और फरिश्ता स्थिति की एक्सरसाइज सारे दिन में बार-बार करते रहना।

2- रोज़ कोई न कोई विशेष दिलपसन्द स्वमान लेकर उसका अभ्यास करना।

3- चलते फिरते कर्म करते देही-अभिमानी स्थिति नेचुरल और नेचर बनाना।

4- निराकारी, निर्विकारी और निरंहकारी के महामन्त्र का स्वरूप बनकर रहना।

5- संकल्पों में श्रेष्ठता, वाणी में निर्मानता, कर्म में सेवा भाव और सम्बन्ध-सम्पर्क में सदा शुभ भावना व श्रेष्ठ कामना की वृत्ति रखना।

ऐसे कुछ मुख्य प्वाइंटस मुरली से नोट करके कम से कम अगली मुरली तक हम सब विशेष अभ्यास करते अपनी चेकिंग का चार्ट रखें तो व्यर्थ सहज ही समाप्त हो जायेगा। बाबा कहते बच्चे, अब समय है विश्व की सर्व आत्माओं को सकाश देने का, वायब्रेशन देने का, मन्सा द्वारा वायुमण्डल बनाने का क्योंकि नाजुक समय समीप आ रहा है। ऐसे समय पर अपनी उड़ती कला द्वारा फरिश्ते स्वरूप में स्थित रह चारों ओर चक्कर लगाते सबको शान्ति, शक्ति और खुशी का अनुभव कराना है। साक्षी हो दुनिया की हलचल के सब खेल देखते सकाश अर्थात् सहयोग देने की सेवा करनी है। ध्यान रहे कि किसी भी प्रकार के वातावरण का सेक खुद पर न आये। बोलो, यही अटेन्शन रख बेहद की सेवा में स्वयं को बिजी रखते हो ना। अब समय है सब हदों को छोड़ बेहद की वृत्ति, बेहद की दृष्टि, बेहद की भावनायें रख विश्व कल्याण करने का।

बाकी आप सब तन और मन से सदा स्वस्थ होंगे। सभी को बहुत-बहुत स्नेह भरी याद के साथ नवरात्रि, विजय-दशमी, दीपावली, नववर्ष, भैया दूज आदि के पावन यादगार त्योहारों की पदमगुणा बधाई हो, बधाई हो। अच्छा - सबको याद...

ईश्वरीय सेवा में,  
बी.के. रतनमोहिनी



# ये अव्यक्त इशारे



नवम्बर 2021 - तपस्वी जीवन के लिए होमवर्क

## (अ) अब सकाश देने की सेवा करो

1) समय प्रमाण अब चारों ओर सकाश देने का, वायब्रेशन देने का, मन्सा द्वारा वायुमण्डल बनाने का कार्य करना है। अब इसी सेवा की आवश्यकता है क्योंकि समय बहुत नाजुक आना है।

2) अब अपनी उड़ती कला द्वारा फरिश्ता बन चारों ओर चक्कर लगाओ और जिसको शान्ति चाहिए, खुशी चाहिए, सन्तुष्टता चाहिए, फरिश्ते रूप में उन्हें अनुभूति कराओ। वह अनुभव करें कि इन फरिश्तों द्वारा शान्ति, शक्ति, खुशी मिल गई।

3) अन्तःवाहक अर्थात् अन्तिम स्थिति, पॉवरफुल स्थिति ही आपका अन्तिम वाहन है। अपना यह रूप सामने इमर्ज कर फरिश्ते रूप में चक्कर लगाओ, सकाश दो, तब गीत गायेगे कि शक्तियां आ गई.... फिर शक्तियों द्वारा सर्वशक्तिवान स्वतः ही सिद्ध हो जायेगा।

4) अभी तो कुछ नहीं है, अभी तो सब कुछ होना है, डरना नहीं, खेल है। विनाश नहीं, परिवर्तन होना है। सबमें वैराग्य वृत्ति उत्पन्न होनी है इसलिए रहमदिल बन सर्व शक्तियों द्वारा परेशान आत्माओं को शक्ति की सकाश दे रहम करो।

5) जैसे साकार रूप को देखा, कोई भी ऐसी लहर का समय जब आता था तो दिन-रात सकाश देने, निर्बल आत्माओं में बल भरने का विशेष अटेंशन रहता था, रात-रात को भी समय निकाल आत्माओं को सकाश भरने की सर्विस चलती थी। तो अभी आप सबको लाइट माइट हाउस बनकर यह सकाश देने की सर्विस खास करनी है जो चारों ओर लाइट माइट का प्रभाव फैल जाए।

6) इस देह की दुनिया में कुछ भी होता रहे, लेकिन फरिश्ता ऊपर से साक्षी हो सब पार्ट देखते सकाश देता रहे। आप सब बेहद विश्व कल्याण के प्रति निमित्त हो तो साक्षी हो सब खेल देखते सकाश अर्थात् सहयोग देने की सेवा करो। सीट से उतर कर सकाश नहीं देना। ऊंची स्टेज पर स्थित होकर देना तो किसी भी प्रकार के वातावरण का सेक नहीं आयेगा।

7) जैसे बाप अव्यक्त वतन, एक स्थान पर बैठे चारों ओर विश्व के बच्चों की पालना कर रहे हैं, ऐसे आप बच्चे भी एक स्थान पर बैठकर बाप समान बेहद की सेवा करो। फालो फादर करो।

बेहद में सकाश दो। बेहद की सेवा में अपने को बिजी रखो तो बेहद का वैराग्य स्वतः ही आयेगा।

8. समय की समपीता प्रमाण माया और प्रकृति अपनी तरफ आकर्षित करने के लिए भिन्न-भिन्न रूप-रंग सामने लाती है लेकिन आप बच्चे अनुभव की अथॉरिटी बन निर्विघ्न विजयी बनो और ज्वालामुखी याद द्वारा विश्व की आत्माओं को सकाश दो, सहयोग दो, रहम करो।

9) यह सकाश देने की सेवा निरन्तर कर सकते हो, इसमें तबियत की बात, समय की बात.. सब सहज हो जाती है। दिन रात इस बेहद की सेवा में लग सकते हो। जब बेहद को सकाश देंगे तो नजदीक वाले भी ऑटोमेटिक सकाश लेते रहेंगे। इस बेहद की सकाश देने से वायुमण्डल ऑटोमेटिक बनेगा।

10) आप ब्राह्मण आदि रत्न विशेष तना हो। तना से सबको सकाश पहुंचती है। तो कमजोरों को बल दो। अपने पुरुषार्थ का समय दूसरों को सहयोग देने में लगाओ। दूसरों को सहयोग देना अर्थात् अपना जमा करना। अभी ऐसी लहर फैलाओ – देना है, देना है, देना ही देना है। देने में लेना समाया हुआ है।

11) अगर अभी से स्व कल्याण का श्रेष्ठ प्लैन नहीं बनायेंगे तो विश्व सेवा में सकाश नहीं मिल सकेगी। इसलिए अभी सेवा में सकाश दे, बुद्धियों को परिवर्तन करने की सेवा करो। फिर देखो सफलता आपके सामने स्वयं झुकेगी। मन्सा-वाचा की शक्ति से विघ्नों का पर्दा हटा दो, तो अन्दर कल्याण का दृश्य दिखाई देगा।

12) ज्ञान के मनन के साथ शुभ भावना, शुभ कामना के संकल्प, सकाश देने का अभ्यास, यह मन के मौन का या ट्रैफिक कन्ट्रोल का बीच-बीच में दिन मुकरर करो। अगर किसको छुट्टी नहीं भी मिलती हो, सप्ताह में एक दिन तो छुट्टी मिलती है, उसी प्रमाण अपने-अपने स्थान के प्रोग्राम फिक्स करो। लेकिन विशेष एकान्तवासी और खजानों के एकांामी का प्रोग्राम अवश्य बनाओ।

13) साइन्स वाले भी सोचते हैं ऐसी इन्वेन्शन निकालें जो दुःख समाप्त हो जाए, साधन सुख के साथ दुःख भी देता है। सोचते जरूर है कि दुःख न हो, सिर्फ सुख की प्राप्ति हो लेकिन स्वयं की

आत्मा में अविनाशी सुख का अनुभव नहीं है तो दूसरों को कैसे दे सकते हैं। आप सबके पास तो सुख का, शान्ति का, निःस्वार्थ सच्चे प्यार का स्टॉक जमा है, तो उसका दान दो।

14) अब सर्व ब्राह्मण बच्चों को यह स्पेशल अटेन्शन रखना है कि हमें चारों ओर पावरफुल याद के वायब्रेशन फैलाने हैं, क्योंकि आप सब ऊंचे ते ऊंचे स्थान पर रहते हो। तो जो ऊंची टावर होती है, वह सकाश देती है, उससे लाइट माइट फैलाते हैं। तो रोज़ कम से कम 4 घण्टे ऐसे समझो हम ऊंचे ते ऊंचे स्थान पर

बैठ विश्व को लाइट और माइट दे रहा हूँ।

15) वर्तमान समय विश्व की आत्मायें बिल्कुल ही शक्तिहीन, दुःखी अशान्त हैं, वह चिल्ला रही हैं, पुकार रही हैं, कुछ घड़ियों के लिए सुख दे दो, शान्ति दे दो, हिम्मत दे दो, बाप बच्चों के दुःख परेशानी देख नहीं सकते, आप पूज्य आत्मायें भी अपने रहमदिल दाता स्वरूप में स्थित हो, ऐसी आत्माओं को विशेष सकाश दो।

## (ब) वृत्ति द्वारा वायुमण्डल को शक्तिशाली बनाओ

16) सबसे तीव्रगति की सेवा है - “वृत्ति द्वारा वायब्रेशन फैलाना”। वृत्ति बहुत तीव्र रॉकेट से भी तेज है। वृत्ति द्वारा वायुमण्डल को परिवर्तन कर सकते हो। जहाँ चाहो, जितनी आत्माओं के प्रति चाहो वृत्ति द्वारा यहाँ बैठे-बैठे पहुंच सकते हो। वृत्ति द्वारा दृष्टि और सृष्टि परिवर्तन कर सकते हो। सिर्फ वृत्ति में सर्व के प्रति शुभ भावना, शुभ कामना हो।

17) विश्व कल्याण करने के लिए आपकी वृत्ति, दृष्टि और स्थिति सदा बेहद की हो। वृत्ति में ज़रा भी किसी आत्मा के प्रति निगेटिव या व्यर्थ भावना नहीं हो। निगेटिव बात को परिवर्तन कराना, वह अलग चीज़ है। लेकिन जो स्वयं निगेटिव वृत्ति वाला होगा, वह दूसरे के निगेटिव को पॉजिटिव में चेंज़ नहीं कर सकता।

18) अभी समय प्रमाण बेहद के वैराग्य वृत्ति को इमर्ज करो। बिना बेहद के वैराग्य वृत्ति के सकाश की सेवा हो नहीं सकती। वर्तमान समय जबकि चारों ओर मन का दुःख और अशान्ति, मन की परेशानियां बहुत तीव्रगति से बढ़ रही हैं। तो जितना तीव्रगति से दुःख की लहर बढ़ रही है, उतना ही आप सुख दाता के बच्चे अपने मन्सा शक्ति से, सकाश की सेवा से, वृत्ति से चारों ओर सुख की अंचली का अनुभव कराओ।

19) आप बच्चे जहाँ भी रहते हो, जो भी कर्मक्षेत्र है, आप हर एक बच्चे से बाप समान गुण, कर्म और श्रेष्ठ वृत्ति का वायुमण्डल अनुभव में आये, यही है बाप समान बनना। सब कुछ होते हुए, नॉलेज और विश्व कल्याण की भावना से, बाप को, स्वयं को प्रत्यक्ष करने की भावना से अभी बेहद की वैराग्य वृत्ति धारण करो।

20) जैसे स्थापना के आदि में साधन कम नहीं थे, लेकिन बेहद के वैराग्य वृत्ति की भट्टी में पड़े हुए थे। यह 14 वर्ष जो तपस्या की, यह बेहद के वैराग्य वृत्ति का वायुमण्डल था। बापदादा ने अभी साधन बहुत दिये हैं, साधनों की कोई कमी नहीं है लेकिन

होते हुए बेहद का वैराग्य हो। आपके वैराग्य वृत्ति के वायुमण्डल के बिना आत्मायें सुखी, शान्त बन नहीं सकती, परेशानी से छूट नहीं सकती।

21) कितना भी कोई भटकता हुआ, परेशान, दुःख की लहर में आये, खुशी में रहना असम्भव भी समझते हों लेकिन आपके सामने आते ही आपकी मूर्त, आपकी वृत्ति, आपकी दृष्टि आत्मा को परिवर्तन कर दे। सेवा में बेहद की वैराग्य वृत्ति अन्य आत्माओं को और समीप लायेगी। मुख की सेवा सम्पर्क में लाती है और वृत्ति से वायुमण्डल की सेवा समीप लायेगी।

22) अभी आप बच्चों को दो प्रकार के कार्य करने हैं - एक तो आत्माओं को योग्य और योगी बनाना है, दूसरा धरनी को भी तैयार करना है। इसके लिए विशेष वाणी के साथ-साथ वृत्ति को और तीव्रगति देनी पड़ेगी क्योंकि वृत्ति से वायुमण्डल बनेगा और वायुमण्डल का प्रभाव प्रकृति पर पड़ेगा, तब तैयार होंगे। वाणी और वृत्ति दोनों साथ-साथ सेवा में लगे रहें।

23) आपके बोल, कर्म और वृत्ति से हल्केपन का अनुभव हो। ऐसे नहीं, मैं तो हल्का हूँ लेकिन दूसरे मेरे को नहीं समझते, पहचानते नहीं। अगर नहीं पहचानते तो आप अपने विल पॉवर से उन्हीं को भी पहचान दो। 95 परसेन्ट सबके दिलपसन्द बनो। आपके कर्म, वृत्ति उसको परिवर्तन करें। इसमें सिर्फ सहनशक्ति को धारण करने की आवश्यकता है।

24) अगर आपकी वृत्ति में श्रेष्ठ भावना, श्रेष्ठ कामना है तो अपने संकल्प से, दृष्टि से, दिल की मुस्कराहट से सेकण्ड में किसी को बहुत कुछ दे सकते हो। जो भी आवे उसको गिफ्ट दो, खाली हाथ नहीं जाये। जितना निश्चय रूपी फाउण्डेशन पक्का है, उतना ही आदि से अब तक सहज योगी, निर्मल स्वभाव, शुभ भावना की वृत्ति और आत्मिक दृष्टि सदा नेचुरल रूप में अनुभव होगी।

25) हर व्यक्ति को, बात को पॉजिटिव वृत्ति से देखो, सुनो या सोचो तो कभी जोश या क्रोध नहीं आयेगा। आप मास्टर स्नेह के सागर हो तो आपके नयन, चैन, वृत्ति, दृष्टि में ज़रा भी और कोई भाव नहीं आ सकता, इसलिए चाहे कुछ भी हो जाये, सारी दुनिया क्यों नहीं आप पर क्रोध करे लेकिन मास्टर स्नेह के सागर दुनिया की परवाह नहीं करो। बेपरवाह बादशाह बनो, तब आपकी श्रेष्ठ वृत्तियों से शक्तिशाली वायुमण्डल बनेगा।

26) जैसे आजकल साइन्स के साधनों द्वारा रफ़ माल को भी बहुत सुन्दर रूप में बदल देते हैं। तो आपकी श्रेष्ठ वृत्ति निगेटिव अथवा व्यर्थ को पॉजिटिव में बदल दे। आपका मन और बुद्धि ऐसा बन जाये जो निगेटिव टच नहीं करे, सेकण्ड में परिवर्तन हो जाये।

27) ज्ञान मनन के साथ शुभ भावना, शुभ कामना के संकल्प, सकाश देने का अभ्यास, यह मन के मौन का, ट्रैफिक कन्ट्रोल का टाइम मुकरर करो। विशेष एकान्तवासी और खजानों के एकानामी का प्रोग्राम बनाओ। एकनामी और एकानामी वाले बनो।

28) यदि कोई संस्कार स्वभाव वाली आत्मा आपके पुरुषार्थ में परीक्षा के निमित्त बनी हुई हो तो उस आत्मा के प्रति भी सदा कल्याण का संकल्प वा भावना बनी रहे, आपके मस्तक अर्थात् बुद्धि की स्मृति वा दृष्टि से सिवाए आत्मिक स्वरूप के और कुछ भी दिखाई न दे, तब श्रेष्ठ शुभ वृत्तियों द्वारा मन्सा सेवा कर सकेंगे।

29) अभी समय प्रमाण वृत्ति से वायुमण्डल बनाने के तीव्र पुरुषार्थ की आवश्यकता है इसलिए वृत्ति में जरा भी किचड़ा न हो, तब प्रकृति तक आपका वायुब्रेशन जायेगा और वायुमण्डल बनेगा इसलिए हर एक की विशेषताओं को देखो और अपनी वृत्ति को सदा शुभ रखो। इसके लिए याद रखो कि “दुआ देना है और दुआ लेना है” कोई भी निगेटिव बात एक कान से सुनकर दूसरे कान से निकाल दो।

30) आप क्षमा के सागर के बच्चे हो तो परवश आत्माओं को क्षमा दे दो। अपनी शुभ वृत्ति से ऐसा वायुमण्डल बनाओ जो कोई भी आपके सामने आये, वह कुछ न कुछ स्नेह ले, सहयोग ले, क्षमा का अनुभव करे, हिम्मत का उमंग-उत्साह का अनुभव करे।

## (त्रिमूर्तिदादियोंके अमृत वचन)

शिवबाबा याद है ?

ओम् शान्ति

मधुबन

**“अपनी दिल को इतना मजबूत बना लो जो कभी फीलिंग की बीमारी ना आये, अपने संकल्पों को वेस्ट से बेस्ट बनाओ”**

(गुल्जार दादी जी टीचर्स से 2006)

टीचर्स को बाबा कहता है कि मेरे गुरुभाई है! क्योंकि टीचर्स को भी मुरली सुनाने की गद्दी मिलती है। वैसे कोई भी गुरु की गद्दी पर बैठने का एलाऊ नहीं करते हैं। जहाँ गुरु बैठते हैं वहाँ दूसरे किसी को बैठने नहीं देते हैं। लेकिन बाबा ने हमें अपनी गद्दी दी। अपना साथी बना लिया। तो टीचर्स के फीचर्स से सदा बाबा दिखाई दे क्योंकि टीचर का कर्तव्य ही है बाबा की बातें सुनाना, समझाना इसलिए बाबा टीचर्स को उसी नज़र से देखते हैं कि मेरे गुरुभाई हैं। मुरली सुनाना कॉमन नहीं है क्योंकि मुरली जीवन परिवर्तन करने का आधार है। अगर पुरुषार्थ में कभी ढीलापन आ जाता है तो मुरली पढ़ने से फर्क पड़ जाता है। कोई न कोई

प्वॉइन्ट ऐसी मिल जाती है जो दिल में जंच जाती है।

हम ऐसे ही पढ़ने की रीति से मुरली न पढ़ें। बाबा जो मुरली में कह रहे हैं उसकी अनुभूति करें। समझो बाबा कहता है तुम आत्मा परमधाम में थी फिर चक्र में आई तो परमधाम का अनुभव उस समय दिल में हो, सचमुच मैं परमधाम में थी, अभी फिर आई चक्र लगाने के लिए। मुरली सुनने वाले या पढ़ने वाले मुरली उसी ध्यान से सुने तो अनुभव होगा कि मुरली हमें सारे कल्प का चक्र लगवा रही है। मुरली द्वारा बाबा कभी सतयुग में ले जाता है, कभी द्वापर में ले जाता है, कभी संगम पर ले आता है। तो हमारी बुद्धि चक्र लगाती रहे, उस स्थिति का अनुभव

करते रहें तो मुरली में बहुत मजा आता है। जैसे बाबा ले जा रहा है और हम साथ में जा करके अनुभव करके फिर औरों का सुना रहे हैं। इस अनुभूति में रहेंगे तो कभी सुनने वाले को और सुनाने वाले को सुस्ती नहीं आयेगी। मुरली के साथ-साथ बुद्धि भी उसी अनुसार चक्र लगाती रहे। फिर देखो मुरली में कितना मजा आता है। और मुरली से हमको अपने लिए कोई न कोई होमवर्क जरूर रखना चाहिए। जैसे बाबा पहले कहता कि बच्ची संकल्पों में कोई बात आती है तो हर्जा नहीं है, कर्म में नहीं आना। अभी बाबा कहता है व्यर्थ संकल्प को ही कन्ट्रोल करो, कितनी ऊंची स्टेज हो गई है। तो व्यर्थ संकल्प को कन्ट्रोल करने का साधन है शुभ संकल्प। जैसे सांप डसता है तो सांप की दवाई ही उसे ठीक करती है। तो हमारे में जो व्यर्थ संकल्प चलते हैं उसको चेन्ज करने के लिए हमारे पास शुभ संकल्प का स्टॉक चाहिए। शुभ संकल्प के मनन में चले जाते हैं तो हमारी लाइफ ही बदल जाती है। वेस्ट से बेस्ट की तरफ टर्न हो जाते हैं।

जब याद में बैठते हैं तब ऐसी जो भी कोई बात होगी वो उस समय ज्यादा याद आती है इसलिए व्यर्थ संकल्प को कन्ट्रोल करने के लिए हमारे पास शुभ संकल्प का स्टॉक होना चाहिए। एक एक प्वाइन्ट का मनन करते जायें तो लाइन चेन्ज हो जायेगी। जितना मनन का अनुभव होगा उतना वेस्ट थॉट को चेन्ज कर सकेंगे। अगर हमारे पास शुभ संकल्पों का स्टॉक नहीं है तो वेस्ट संकल्प में टाइम वेस्ट होता है। 15 मिनट ऐसे बीत जायेंगे जो पता ही नहीं पड़ेगा कि वेस्ट चल रहा है या क्या चल रहा है...। एक होती है बात हो गई है दूसरा होता है बात दिल को लग गई। इनसल्ट हो या कोई ने कुछ उल्टा सुल्टा कर लिया। कुछ भी ऐसी बात जो दिल को लग जाती है वह बहुत लम्बा समय तक चलती रहती है। उस वेस्ट में बहुत पॉवर होती है। अगर उस समय ज्ञान का मनन हमारे संकल्पों को कन्ट्रोल नहीं कर रहा है, माया व्यर्थ संकल्प के रूप में वार कर रही है तो उस समय हमको फिर अपने लाइफ की स्टोरी याद करनी चाहिए क्योंकि कहानी कभी भूलती नहीं है। जैसे मानो आप ज्ञान में आई, पहले पहले बाबा से मिली... वो हमारे जीवन की स्टोरी है ना। समझो हम पाण्डव भवन में गये, बाबा ऐसे खड़ा था, बाबा से मिले, बाबा से दृष्टि मिली... तो यह स्टोरी हो गई ना। तो कोई न कोई अपने जीवन की स्टोरी जो है, भले उसी याद में चले जाओ लेकिन वेस्ट खत्म जरूर करो क्योंकि वेस्ट को कन्ट्रोल नहीं करेंगे तो आदत पड़ जाती है। कोई भी छोटी बात होगी, व्यर्थ संकल्प चलना शुरू हो जायेंगे। और उसकी गति बहुत तेज होती है, एक सेकेण्ड में अमेरिका पहुँच

जायेंगे, बिना वीजा और टिकट के। संकल्प की शक्ति बहुत फास्ट है, व्यर्थ की और ही फास्ट होती है इसीलिए अभी बाबा ने अटेंशन खिचवाया है कि वेस्ट को बेस्ट में चेन्ज करो लेकिन उसके लिए हमारे पास शक्तियों का स्टॉक होना चाहिए।

अगर स्टॉक ही नहीं होगा, कन्ट्रोलिंग पॉवर, रूलिंग पॉवर नहीं होगी तो स्टॉप हो सकता है क्या? इसीलिए बाबा ने कहा था पहले स्टॉक इकट्ठा हो, वो चेक करो। कई बार युवा जीवन में सहनशक्ति की बहुत कमी होती है। थोड़ा कुछ हुआ तो फीलिंग जल्दी आ जायेगी, चाहे रोना किसको आ जाये, किसकी मूड खराब हो जाये या बात करना बन्द कर दे, किसने कुछ कहा तो उससे मुँह फेर देंगे। कोमलता में समाने की शक्ति और सहनशक्ति बहुत चाहिए। सहन करते-करते कभी ऐसे होता है जो कहते आखिर मेरे को ही सहन करना है क्या? मेरे को ही सब कहते हैं कि सहन करना है! क्या मेरे को ही मरना है? मेरे को ही बदलना है क्या? दूसरा बदले नहीं बदले लेकिन मेरे को ही मरना है, क्यों? यह आता है ना। उस समय माया आती है तो यह होता है लेकिन हम समझते हैं इसके कारण मुझे बार-बार सहन करना पड़ता है, उस समय हमको यह यूज करना है कि हमको सहनशक्ति देने वाला कौन? सिखलाने वाला कौन? बाबा की मत है सहनशील बनना है, बाबा की श्रीमत मान रहे हैं, उसके कारण सहन नहीं कर रहे हैं। सहनशक्ति का डायरेक्शन हमको देने वाला कौन? बाबा ने क्यों सहनशक्ति दी? बाबा जानता है कि यह पेपर तो सबके सामने आयेंगे। इसलिए बाबा के कारण मैं सहन कर रही हूँ। भगवान की आज्ञा पर चलने का फल तो बाबा देगा ना।

समझो कोई युद्ध कर रहा है और विजय हो जाती है, मैंने सहनशीलता धारण की और सचमुच मेरे में बाबा द्वारा खुशी मिली, विजय हो गई, तो खुशी कितनी होती है! वो बहुत बोल रही थी, मैंने तो सिर्फ एक शब्द बोल दिया। लेकिन एक शब्द भी बोलकर आपने जैसे आग में मिट्टी का तेल डाल दिया। उस समय पानी चाहिए या तेल चाहिए? अगर आपकी उसके प्रति शुभ भावना है तो आप साइलेंस में रहो, मुस्कराते रहो, शुभ भावना और शुभ कामना में रहो तो यह है पानी डालना। और अगर आपने एक शब्द भी उल्टा बोल दिया तो समझो आपने तेल की बूँद डाल दी। वो बिचारी पहले ही भड़क रही है, और आपने एक बूँद और डाल दी तो और भी भड़केगी ना, इसीलिए हमको यह सोचना चाहिए कि मैं अगर सहन कर रही हूँ, तो मैं बाबा की श्रीमत को मान रही हूँ। व्यक्ति या बात सामने आती तो

उसके प्रति ही सोचते यह ऐसे करती, यह ऐसे करती... इसलिए सहनशक्ति इस जीवन में बहुत चाहिए क्योंकि हम निमित्त बनते हैं ना। सम्बन्ध-सम्पर्क बहुतों से बनता है। जिज्ञासुओं से भी बनता है, साथियों से भी बनता है और जहाँ हमशरीक साथी होते हैं वहाँ ज्यादा फीलिंग आती है।

बाबा कहते बच्चे न दुःख देना, न दुःख लेना... तो देने में हम ध्यान रखते हैं और लेने में हल्के हो जाते हैं। समझो किसने कुछ किया फीलिंग आ गई। देने वाले ने दिया, लेने वाला कौन? समझो आपको कोई बुरी चीज़ देता है, आप लो या नहीं लो वो आपके ऊपर है ना। देने वाला ही लेने वाला थोड़ेही होता है। फीलिंग में आये माना ले लिया ना। लिया क्यों? गलती हमारी है ना, इसने ऐसा कहा ना इसलिए मुझे फीलिंग आई। लेकिन लेने वाली मैं हूँ, फील करूँ या नहीं करूँ वो हमारे ऊपर है। बाबा ने कहा लेने वाले के ऊपर भी दोष तो उसका हुआ ना क्योंकि लेना माना फीलिंग करना। फीलिंग एक फ्लू की बीमारी है। फीलिंग करना माना दुःख लेना। दुःख लेना माना अपने को दुःख देना। तो हमारी दिल इतनी मजबूत हो जो यह फीलिंग की बीमारी आवे ही नहीं। बाबा ने इतना ज्ञानामृत पिलाया, यह याद नहीं रखते। लेकिन किसी ने पानी का ग्लास नहीं पूछा तो कितना सोच लेते। बाबा ने तो आपको पूछ लिया है, अपना बना लिया माना बाबा ने पूछा ना। दिल ली ना, तभी तो हम बाबा के बने। तो भगवान ने हमारी दिल ले ली है। तो हमको दुःख लेना नहीं है यह अटेन्शन रखो। लेंगे नहीं तो देने का तो ऑटोमेटिकली नहीं होगा क्योंकि अनुभव है। याद रहता है ना कि दुःख लेने से क्या होता है? इसलिए फिर देने की भी दिल नहीं होती है। तो ऐसी हमारी धारणायेँ होनी चाहिए, तभी हमारे वेस्ट थॉट्स बन्द होंगे।

बहुतकाल से वेस्ट थॉट्स खत्म करने का अभ्यास चाहिए, नहीं तो अन्त में चारों तरफ से पेपर आयेँगे, पांचों तत्व एक ही टाइम काम करेंगे। रावण की वेस्ट थॉट (अशुद्धि) की प्रॉपर्टी अगर हमारे दिल में होगी तो क्या होगा? शुद्ध और अशुद्ध एक साथ नहीं रह सकते हैं ना? शुद्ध अशुद्ध दोनों हैं तो युद्ध चलती रहेगी। युद्ध चलने का कारण है कुछ न कुछ रावण की प्रॉपर्टी अपने पास रखा हुआ है। तो दोनों के बीच बाबा नहीं आ सकता है। बाबा बिन्दू स्वरूप है, वह बिन्दू सहज खिसक जाता है इसलिए बाबा ने कहा चेक करो कोई भी ऐसी अशुद्ध प्रॉपर्टी संकल्प, बोल, वाणी में या सम्बन्ध-सम्पर्क में न हो। हम टीचर्स को तो पहली सबजेक्ट ही है सम्बन्ध-सम्पर्क क्योंकि जिज्ञासुओं के साथ और साथियों से भी कनेक्शन रखना पड़ता है। सेन्टर ही हमारा पेपर हॉल है तो वहाँ पेपर तो आयेँगे ही। ऐसे में कई कहते कि बहन चेन्ज हो जाये या मैं चेन्ज हो जाऊँ या स्थान चेन्ज हो जाये तो बहुत अच्छा हो जायेगा। लेकिन हम कहते हैं जहाँ भी आप जायेँगी वहीं आपका पेपर होगा। पेपर तो साथियों के साथ से ही आयेगा ना। लेकिन हमको पेपर में पास होना है। इतने थोड़े-से टाइम में 21 जन्म की प्रालब्ध मिलनी है, पद मिलना है। तो आप सोचो, पेपर तो आयेँगे ना। बिना पेपर के ही इतनी बड़ी प्रालब्ध मिलेगी क्या? जितना आगे बढ़ेंगे उतना पेपर टफ होते जायेँगे। तो पेपर से घबराना नहीं है क्योंकि आपका पेपर आपके अनुभव को बढ़ाने के लिए है इसलिए सिर्फ क्यों, क्या... नहीं करो। पेपर न सोच करके यह हमको अनुभवी बना रहा है, यह सोचो, उससे आगे के लिए अनुभव क्या लिया, यह सोचो तो फिर वेस्ट थॉट्स नहीं चलेँगे। अच्छा।

**“अतीन्द्रिय सुख में रहना है तो सदा खुशी की बातें स्मृति में रखो, बाबा जो सुनाता है उसका सिमरण करो”**

**(दादी जानकी जी 16-02-2006)**

नुमाशाम का टाइम योग में बैठने का टाइम है परन्तु अभी साइलेंस में बैठे साइलेंस की ही बातें करेंगे। जब बाबा शब्द कहते हैं तो क्या याद आता है? बाबा का प्यार, दृष्टि। बाबा की दृष्टि से प्यार का अनुभव होता है। बाबा के बोल से समझ मिल जाती है

तो बुद्धि खुल जाती है।

बाबा से क्या मिला है? पालना, पढ़ाई और प्राप्ति। वो हमारा न सिर्फ बाबा है, पर मात-पिता, पालनहार है इसलिए बाबा बच्चों को कहते हैं कि तुम सिर्फ बेफिक्र रहना सीखो। बच्चा माना

बेफिक्र। बाबा शिक्षा भी तो बेफिक्र रहने के लिए दे रहा है क्योंकि बच्चे को कोई फिक्र होता है तो वो पढ़ाई अच्छी रीति नहीं पढ़ सकते हैं। बाबा का बच्चा बनने से ही स्टूडेंट लाइफ हो गई।

शिवबाबा ने आते ही रूद्र ज्ञान यज्ञ रचा, अब यज्ञ सम्भालेगा कौन? ब्रह्माबाबा से समर्पण कराया तो वास्तव में ब्रह्मा जयन्ती भी हो गई, तो हम ब्राह्मणों की जयन्ती भी हो गई। तो पहले किसकी जयन्ती? तो हम पहले बाबा की जयन्ती मना रहे हैं। बाबा हमारी मना रहे हैं। सारे कल्प में परमात्मा को बाबा कहने वाले हम बच्चे ही हैं। जब हम देवता होंगे तो क्या करेंगे? इतना दूर देश का रहने वाला बाबा खास हमारे लिए भारत में आया, हमारे लिए यज्ञ रचा, यज्ञ से हम बच्चों की पालना हुई। यज्ञ सेवा करके हम ब्राह्मण बन गये। अगर हम ब्रह्मा मुख से ज्ञान सुनके ब्राह्मण नहीं बनते, तो यज्ञ सेवा नहीं कर सकते। जिसके मन में युद्ध चलती है तो उसकी सेवा में दिल नहीं लगती है और जिसको चिंता ममता रहती है उनकी दिल भी सेवा में नहीं लगती है। कोई कुछ भी किसी तरह की भी यज्ञ सेवा न करे सिर्फ यज्ञ से खाता रहे, उसको यज्ञ के ब्रह्माभोजन की ताकत नहीं मिलती है। ब्राह्मण और सेवा न करे, तो वास्तव में वो लाइफ ही नहीं है। सारे कल्प में ब्राह्मण लाइफ बहुत श्रेष्ठ लाइफ है।

जो अतीन्द्रिय सुख में रहते हैं उनके पास दुःख का नाम-निशान भी नहीं रहेगा। संगमयुग है, बाबा के बच्चे हैं, ब्रह्मामुख वंशावली ब्राह्मण हैं, स्वदर्शन चक्रधारी हैं, कल्प पहले वाले हैं, थे, हैं और होंगे। ऐसी-ऐसी खुशी की बातों को स्मृति में रखेंगे तो अतीन्द्रिय सुख में रहेंगे। सोचने और सिमरण करने में फर्क है। सोचने में कभी उल्टा सोच भी आ सकता है। सिमरणी में आने वाले सिर्फ बाबा की बातों का ही सिमरण करते हैं। जो बाबा सुनाता है वो अन्दर ही अन्दर सिमरण करके सिमर सिमर सुख पाते हैं। तो ज्ञान का सिमरण करते बाबा की याद में रहते हैं। यह अटेन्शन है तो याद अच्छी रहती है। यहाँ बैठे हैं तो बाबा की याद आई, बाकी सारे दिनभर में तो बहुत बातें याद आती हैं। तो सोचने की बात है कि जिसको बहुत बातें याद आती हैं, उसकी याद कैसी होगी? इसलिए बाबा ने कहा है - गृहस्थ का कार्य-व्यवहार करते हुए भी न्यारा रहना है। तो यह जो बाबा के बोल हैं, वह बड़े पॉवरफुल हैं। जो व्यर्थ सोचता है वो बाबा की सुनते भी नहीं सुनता है।

बाबा तो बेहद का बाबा है, सर्व आत्माओं का पिता है। ऐसे बाबा को जो जानते हैं, अन्दर से मानते हैं, पहचानते हैं, उनका

तो स्पेशल पिता है। पहचानने वाले को पता है, यह बाबा की श्रीमत है, तो मनमत पर नहीं चलते हैं। श्रीमत पॉवर देती है। जो सुबह से रात्रि तक बाबा की बनाई हुई दिनचर्या अनुसार चलते हैं उनकी अन्त मते अच्छी गति होती है। तो ब्राह्मणों को एक मुरली चाहिए, दूसरा आपस में बहुत प्यार चाहिए। जो किसी की कम्पलेन करता है, या उसकी कोई और कम्पलेन करता है, तो वह सुखी नहीं रह सकता है। तो सदा याद रहे मैं बाबा का बच्चा हूँ। यज्ञ सेवा करना, यज्ञ का ब्रह्माभोजन खाना और ईश्वरीय परिवार से मिलके चलना, तो कितना भाग्यवान हूँ, तब भगवान के घर बैठा हूँ।

तो याद ऐसी हो जो किसकी याद न आये, वो होगा अन्दर में ज्ञान का सिमरण करने से। उसी ही मनन चिंतन में रहने से। योग माना बाबा के साथ कनेक्शन। बाबा के साथ सर्व सम्बन्धों की शक्ति है तो इस योगबल से ऑटोमेटिक बाकी सब शक्तियाँ आपेही काम करने लगती हैं। तो हमारा बोल-चाल योगबल से चेन्ज हो गया है। अगर मन में किसकी बात, मुख में किसकी बात रखता है तो वो राजयोगी कैसे हो सकता है। तो पढ़ाई अन्दर से काम करती रहे, पढ़े पास हो जाये, फिर प्रैक्टिस करे तब उसकी कमाई अच्छी होगी। डॉ. हो या वकील हो। अच्छा अनुभव हो गया तो पगार बढ़ता जायेगा। हमारी तो पढ़ाई और प्रैक्टिस एक ही टाइम है, इसलिए पढ़ाई में भी कमाई है। भगवान कहता है तुम मेरे बच्चे राजाओं के राजा बच्चे हो, तो तुम्हारी पढ़ाई और प्रैक्टिस दोनों साथ-साथ है। योगबल माना क्या? जहाँ तू नहीं, तेरा मेरा नहीं। न रहा मैं न रहा मेरा, मैं बोलो, तो मैं अशरीरी आत्मा हूँ, मेरा बोलो, तो मेरा एक बाबा दूसरा न कोई, यह है योगबल। तुम बच्चे ऐसे अनुभव में रहो तो तुम्हारे अनुभव के गीत और गायेगे। तो अभी हमको जो भगवान से मिला है उस अनुभव की मूर्ति बनना है।

स्थिति ऊंच बनाते हैं तो पद आपेही ऊंच हो जाता है। स्थिति को कभी इधर, कभी उधर लटकाना नहीं चाहिए। कभी किसकी कम्पलेन, कभी किसकी कम्पलेन... कभी शान्ति में नहीं दिखाई पड़ते हैं। तो इतना हमारा भाग्य है जो भाग्य को देख हमें हर्षित रहना है। जो हर्षित नहीं रहता है वो अपने को भाग्यवान नहीं समझता है। तो ऐसे अन्दर से याद क्या है, योग कैसा है? हमारे आधार से सारी दुनिया खड़ी है। चक्र कहता है चलो अभी घर जाने का टाइम हो गया है, हम भी रेडी होके बैठे हैं। अच्छा, ओम् शान्ति।

# दादी प्रकाशमणि जी के अमृतवचन

## विजय माला में आना है तो अपना पेपर आपेही लो और अपनी सूक्ष्म चेकिंग कर परिवर्तन करो

(1998)

हर एक अपने आपसे पूछो कि हम कौन हैं? हम गॉडली स्टूडेंट हैं। हम राजयोगी हैं। हम विश्व सेवाधारी, वर्ल्ड सर्वेन्ट हैं। हम सो ब्राह्मण सो पूज्य देवता हैं। हम फालो फादर करने वाले हैं। हम बेहद के त्यागी, संन्यासी हैं। हम राजऋषि, तपस्वी हैं। तो हमारी ड्युटी क्या है अथवा हमारी जिम्मेवारी क्या है? स्व परिवर्तन से विश्व परिवर्तन करना। इस समय बाबा का हमारे लिए क्या इशारा है? और हमारे पढ़ाई का अन्तिम पेपर क्या है? विद ऑनर्स पास होना और कर्मातीत बनना। हमारे पेपर की रिजल्ट है विजय माला के विजयी रत्न बनना। फिर भी आता है – हम कौन हैं? हम है परमपिता परमात्मा की डायरेक्ट सन्तान। हमारा परिवार क्या है? भाई-भाई या बहन-भाई यह सारा हमारा ईश्वरीय परिवार है। तो इस तरह से हमारे पढ़ाई की क्या-क्या सबजेक्ट्स हैं, उन सब सबजेक्ट्स को चेक करो कि

1- हमारे बुद्धि में ज्ञान की सब प्वाइन्ट्स बराबर धारण हैं? जो कोई भी टाइम कोई भी बात का हम ज्ञान-युक्त जवाब दे सकें? 2. हमारे योग की स्टेज क्या है? 3. हमारे पास सब शक्तियों की रिजल्ट क्या है? 4. हमारे में वैल्यूज कितनी हैं? और बाकी हमारे में कमजोरी किस चीज़ की है? 5. हम नष्टोमोहा कहाँ तक बने हैं? 6. हम मायाजीत, जगतजीत, विजयी रत्न कहाँ तक बने हैं? 7. हमारा ड्रामा पर और खुद पर फेथ कहाँ तक है? ऐसे अनेक सवाल हम अपने आपसे पूछ सकते हैं और उसी से अपना चार्ट चेक कर सकते हैं। जैसे पेपर होता है वैसे हरेक बात का खुद ही खुद से क्वेश्चन निकाल उनका जवाब लिखो। तो अपने चार्ट का खुद ही जवाब आयेगा।

फिर देखो कि हम आलराउण्ड नम्बरवन हैं या नम्बर टू हैं? अगर अभी हमारा पेपर हो तो हम कहाँ तक उन सबमें पास हो सकते हैं! समझो निर्भयता का पेपर आता है तो हम निर्भय हैं या डरपोक हैं? ऐसा ही फिर कोई देह-अभिमान का पेपर आता है तो हम देही-अभिमानि रह सकते हैं या नहीं? क्योंकि देह-अभिमान हमें नीचे ले आयेगा। तो ऐसा कोई समय आता जो सत्यता का जवाब देना पड़ता है परन्तु डर के कारण सत्य नहीं बोल सकते हैं, झूठ बोल देते हैं। तो कारण है डरना या कारण हुआ देह-अभिमान। बाबा ने कहा है - अब मुक्ति वर्ष मनाओ तो मुक्ति के लिए हमें इन सभी पेपर्स में पास होना है तब मुक्ति

मिलेगी। तो यह है खुद ही खुद से मेहनत करना, चेक करना और विजयी बनना।

प्युरिटी की सबजेक्ट में मन्सा अर्थात् दृष्टि, वृत्ति और फिर वाचा, सम्पर्क-सम्बन्ध, संकल्प-विकल्प यह सब कहाँ तक यथार्थ हैं? इसमें पहले अपने आपको मार्क्स दो। वाचा और कर्मणा इन सबमें हम कहाँ तक फुल मार्क्स ले सकते हैं? और स्वयं ही साक्षी हो देखो कि हम कहाँ तक उसमें विजयी हैं? ऐसे अनेक प्वाइन्ट्स हैं।

जैसे ड्रामा पर हम सदा ही अडोल रहते हैं? जो होता सो अच्छा, जो होगा सो अच्छा, जो हो रहा है सो अच्छा... जिससे हमारी स्थिति हर परिस्थिति में अडोल रहती है? दूसरों को भी देखते तो लगता इसका भी ड्रामा में यह पार्ट है, खेल है। उन सब खेलों को देख खिलाडी बन हम साक्षी स्थिति में कहाँ तक रहते हैं? या मुझे नफ़रत, घृणा होती है या रहम, दया की भावना रहती है? कहते तो हैं शुभ भावना, सद्भावना, तो ऐसी भावना है? जिसको दूसरे शब्दों में कहते हैं शुभ दुआयें हैं? शुभ भावना माना ही शुभ दुआयें। ऐसी कई प्वाइन्ट्स अपने आप में मनन करो और अपने आपको चेक करके अपना पेपर तैयार करो। फिर चेक करो कि विजयी माला की क्या विशेषतायें हैं और उन विशेषताओं को हमने कहाँ तक जीवन में लाया है?

यदि हमारी अवस्था अच्छी है तो दूसरे को तीर सहज लग सकता है। हमारी अवस्था का दूसरे पर प्रभाव पड़ता है। जैसे दूध कितना स्वच्छ होता, उसमें जरा सा भी दही या निबू का एक बूंद भी अगर डालो तो दूध फट जायेगा। तो वास्तव में हम आत्मायें भी इतनी ही स्वच्छ हैं, उसमें थोड़ा भी कोई दोष होता तो उसका असर अच्छी स्थिति पर फौरन पड़ता है इसलिए हम बहुत-बहुत स्वच्छ आत्मा हैं। हम दूध से भी प्युअर हैं। हमें किसी के संग के दोष में आना तो दूसरी बात है परन्तु संग का रंग टच भी नहीं हो। इसकी सबको बहुत सम्भाल रखनी है। बहुत करके अवस्थाओं पर अगर असर पड़ता है तो हमने देखा है मैजारिटी संगदोष के कारण। नाम ही है संग फिर दोष। एक संग ऊंचा भी बनाता और एक संग नीचे गिरा देता है इसलिए संग की बहुत खबरदारी रखो क्योंकि उसका असर मन-बुद्धि पर बहुत पड़ता है। अच्छा। ॐ शान्ति।